www.pdgroup.in
E-mail : publisher@pdgroup.in
वर्ष 35 प्रथम अंक
जुलाई–अगस्त 2021

सामान्य ज्ञान दर्पण

इस अंक में...

5 सम्पादकीय
7 आईसीसी की पहली विश्व टेस्ट चैम्पियन-शिप न्यूजीलैण्ड के नाम : भारत उपविजेता
8 समसामयिक सामान्य ज्ञान
13 आर्थिक परिदृश्य
18 राष्ट्रीय परिदृश्य
22 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य
28 क्रीड़ा जगत्
31 विज्ञान समाचार
33 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य
34 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न
37 सारभूत तत्व कोष

लेख

40 **सामयिक लेख**—(i) बाल मजदूरी की बढ़ती समस्या
42 (ii) भारत के रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की तरफ बढ़ते कदम
44 **राजनीतिक लेख**— भारतीय सीमा पर चीन की आक्रामकता
45 **चिकित्सीय लेख**— कोरोना की अमोघ स्वदेशी दवा 2-डीजी
46 **काल का प्रवाह लेख**—समय के महत्व को समझें और अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करें
47 **प्राकृतिक आपदा लेख**— वनाग्नि : कारण और निवारण
48 **प्रबन्धन लेख**—मैनेजेरियल कार्य के विभिन्न पहलू
49 कॅरियर सलाह

हल प्रश्न-पत्र

51 एस.एस.सी. द्वारा आयोजित संयुक्त स्नातक स्तरीय (टियर-1) परीक्षा, 2019
61 उत्तर प्रदेश पुलिस जेल वार्डर, कॉंस्टेबिल घुड़सवार एवं फायरमैन भर्ती परीक्षा, 2019
71 एसएससी दिल्ली पुलिस कॉंस्टेबिल (एग्जीक्यूटिव) भर्ती परीक्षा, 2020
78 उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग अधीनस्थ कृषि सेवा (वर्ग-3) प्राविधिक सहायक ग्रुप-सी (सामान्य चयन) प्रतियोगिता परीक्षा, 2018

मॉडल हल प्रश्न-पत्र

92 आगामी राजस्थान अध्यापक पात्रता परीक्षा (REET) (लेवल-2 : कक्षा 6-8) हेतु विशेष हल प्रश्न
99 आगामी उत्तराखण्ड अधीनस्थ सेवा चयन आयोग द्वारा आयोजित समूह 'ग' भर्ती परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
104 आगामी स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया लिपिकीय संवर्ग (प्रा.) परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

विविध/सामान्य

111 **वर्षांत समीक्षा 2020 :** खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग
114 **वर्षांत समीक्षा 2020 :** डाक विभाग
117 क्या आप परिचित हैं ?
118 रोजगार समाचार
120 वार्षिकी : अगस्त 2020 से जून 2021 अंक तक

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. **-सम्पादक**

सम्पादकीय

कदम-कदम आगे बढ़िए सीढ़ी-दर-सीढ़ी ऊँचे उठिए

हम प्रायः सब कुछ पाना चाहते हैं, वह भी अति शीघ्र और किसी छोटे मार्ग द्वारा गला-काट प्रतियोगिता इसका परिणाम है. उजागर होने वाले अनेकानेक घोटाले कम-से-कम समय में, कम-से-कम प्रयत्न द्वारा अधिक-से-अधिक प्राप्त करने की मनोवृत्ति इन घोटालों के पीछे से झाँकती हुई दिखाई देती है. आपाधापी के इस युग में प्रत्येक व्यक्ति सबसे आगे निकलने का प्रयत्न करता है. अपने प्रयत्न में वह जब असफल होता है, तो वह कुण्ठाग्रस्त हो जाता है. वह निराश होकर आत्मग्लानि, हीन-भाव आदि द्वारा ग्रसित हो जाता है. इसकी परिणति संज्ञा-हीनता, विक्षिप्तता तथा आत्महत्या तक में होती है. इसके उपरान्त मनुष्य एक ऐसी भँवर में पड़ जाता है, जो उसको किनारे तक नहीं आने देती है. इस विषम स्थिति से छुटकारा पाने का प्रयत्न न करके मनुष्य, जमाने की शिकायत करने लगता है. हममें से अधिकांश लोगों की दशा उस जेबकतरे की भाँति है, जो चुराए हुए पर्स को खाली पाकर अपने शिकार को इस प्रकार कोसने लगता है—खाली पर्स लेकर चलने वाले लोगों ने शरीफ आदमी का जिन्दा रहना मुश्किल कर दिया है. दोष अपना, खोट अपना और बला दूसरों के सिर. यह व्यवहार वे लोग करते हैं, जो पसीने की कमाई पर भरोसा न करके, तिकड़म अथवा चोर दरवाजे से आगे बढ़ना चाहते हैं.

तनाव तथा उससे उत्पन्न प्रतिकूल मानसिकता से बचने के लिए सबसे पहले हमें आत्म-विश्लेषण द्वारा अपना मूल्यांकन करना चाहिए और यह जानने का प्रयत्न करना चाहिए कि हमारे प्रयत्न में कहाँ और क्या त्रुटि रह गई और किस स्तर पर हमने अधूरे प्रयत्न द्वारा पूर्ण सफलता की आशा की ? हम विश्लेषण करके ही न रह जाएं, अपितु अपनी चिन्तन पद्धति एवं अपनी कार्यशैली में आवश्यक सुधार करने का भी प्रयत्न करें.

अपने लक्ष्य निर्धारित करके उसकी प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील होने के पूर्व हम जगत् और जीवन के दो मौलिक तथ्य सदैव स्मरण रखें. आज तक इस जगत् में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं हुआ है और सम्भवतः होगा भी नहीं, जो समस्त बातों में विशेषज्ञ हो और उसको जीवन में समस्त उपलब्धियाँ प्राप्त हों.

शेक्सपियर केवल नाटककार बने, वह नेपोलियन की तरह सेनानायक बनने की न तो इच्छा कर सके और न वैसे बन ही सकते थे. इसी प्रकार नेपोलियन और नेल्सन अच्छे सेनानायक थे, वे शेक्सपियर, मिल्टन, शैली आदि की भाँति साहित्य के स्रष्टा नहीं बन सकते थे. भारत के तुलसी, टैगोर, प्रेमचन्द आदि की साहित्यिक उपलब्धियों पर भी हम यदि इसी दृष्टि से विचार करें, तो हमारे सामने यह ठोस तथ्य उभरकर आएगा कि प्रत्येक व्यक्ति एक विशेष व्यक्तित्व लेकर जन्म लेता है और उसका जन्म एक विशेष कार्य को सम्पन्न करने के लिए एक विशिष्ट उद्देश्य की पूर्ति के लिए होता है. इसको स्वधर्म कहते हैं और जीवन में सफल होने के लिए इसका ज्ञान होना आवश्यक होता है.